

सावधान आगे खतरा है।

Careful ! Danger Ahead

Class dt. : 08-03-2020

BK Dr. Sachin Bhai ji

Diamond Hall, Shantivan

ओम शांति। लगभग, 200 वर्ष पूर्व जापान में एक ऐसा योगी रहता था, जो नित कहता था, जागो, नींद को त्यागो, जागो। वहां के सम्राट ने उस योगीकी ख्याति सुनी और उसे राजभवन बुलाया, कहा कि-हमने आपके विषय में बहुत सुना है, और हम चाहते हैं कि हमारा राजकुमार आपके प्रशिक्षण में जीवन की कुछ बांते सीखें तो आप उसे यहीं रहकर कुछ बांते सिखाओ। वो योगी कहता है- कि अगर राजकुमार को कुछ सीखना है तो उसे मेरे पास आना होगा, मैं यहां नहीं आऊंगा, और मैं उसे अपने ढंग से सिखाऊंगा, जैसा मैं चाहूं और इसमें कितना भी समय लग सकता है, ये निर्भर करता है उसकी प्रतिभा पर। एक साल, दो साल या और अधिक और जो मैं कहूंगा उसे करना होगा और बीच से वो छोड़कर नहीं आ सकता। अगर ये शर्त मंजूर हैं, तो ही मैं सिखाऊंगा। वो राजा मान जाता है, वो राजकुमार उस योगी के आश्रम में पहुंचता है, आश्रम बहुत छोटा है, एक छोटी सी कुटिया। आते ही वो योगी उस राजकुमार से कहता है कि मैं तुम्हें जो कहूंगा वो तुम्हें करना होगा। सभा में उपस्थित सभी ये सोचें कि वो राजकुमार मैं हूं। उस योगी ने कहा- कि अगले एक हफ्तेतुम्हारा पहला पार्ट ये होगा कि तुम्हें अपने आपको बचाना है, नकली लकड़ी की तलवार से मैं तुम पर वार करूंगा, और मैं कभी भी वार कर सकता हूं, तुम खाना खा रहे हो, तुम झाड़ू लगा रहे हो, आश्रम की कोई सेवा कर रहे हो, कुछ भी कर रहे हो, किसी भी समय मैं आकर वार करूंगा। वो राजकुमार घबरा जाता है, वो कहता है- मैं यहां तलवार सीखने नहीं आया हूं, मैं जीवन के पाठ सीखने आया हूं। वो योगी कहता है- यही मेरा ढंग है, अगर तुम्हें कुछ सीखना है तो ये करना पड़ेगा। अगले एक हफ्ता तक वो राजकुमार इतनी मार खाता है। वो लकड़ी की तलवार बार-बार चलती है, वो काम कर रहा है, पीछे से वो योगी आता है और जोर से उसे मारता है, हड्डी पसलियां उसकी दुखने लगती है, पर धीरे-धीरे वो जाग्रत रहने लगता है, कुछ भी करते समय उसे ख्याल है कभी भी आक्रमण हो सकता है। एक ढाल वो रख लेता है अपने पास। जो भी कार्य कर रहा है, मन के किसी कोने में एक जागृति आई

है। निरंतर जागा हुआ है, कि कभी भी आक्रमण हो सकता है और धीरे-धीरे तीन मास हो जाते हैं, और फिर एक भी वार उसे नहीं लगता है। क्योंकि अब वो हमेशा जागा हुआ है, हमेशा उसे पता है कि किसी भी समय वार हो सकता है और वो अपने आपको बचा लेता है। गुरू आते हैं कहते हैं- तुम्हारा एक पार्ट पहला पार्ट आज पूरा हुआ। अब दूसरा पार्ट- राजकुमार कहता है, दूसरा भी है क्या? वो कहता है हां दूसरा पार्ट, अब मैं तुम पर नींद पर आक्रमण करूंगा, जब तुम सोये हुए होगे, तब आक्रमण करूंगा। राजकुमार कहता है- सोये हुए, मुझे कैसा पता चलेगा आप आ रहे हो? योगी कहता है- तुम्हें पता करना होगा। वो जैसे ही सोने जाता है, जैसे ही नींद लगती है आक्रमण होता है एक हफ्ते तक बहुत बुरी हालत होती है, परंतु धीरे-धीरे वो सोते समय भी जागृत है, धीरे-धीरे सोते समय भी मन के किसी कोने में एक जागरण उत्पन्न हुआ है। उसे पता है, वो आवाज आती है, चलने की, वो ध्वनि उसे सुनाई देने लगती है, सो रहा है परंतु फिर भी जाग रहा है, सोते सोते भी जागृत है। एक अद्भुत सा केंद्र उत्पन्न हुआ है, हृदय में। अब तक सोच थी परंतु जब जागरण है, तब सोच समाप्त हुई केवल जागरण, और पता है कभी भी किसी वक्त आक्रमण हो सकता है। और पहले एक हफ्ता तो बहुत बार होता है, परंतु धीरे-धीरे-धीरे-धीरे वो जागा हुआ ही है जैसे सोते हुए भी और फिर एक समय आता है कि जब-जब आक्रमण होता है वो अपने आपको बचा लेता है। गुरू कहते हैं- तुम्हारा दूसरा पार्ट तीन मास हो गये है, पूरा हुआ। अब तीसरा पार्ट वो कहता है। तीसरा अब क्या है? वो योगी कहता है- अब मैं असली तलवार का प्रयोग करूंगा और तुम्हें अपने आपको बचाना है, सारे दिन भर, असली तलवार। जरा सी भूल हुई, जरा सी लापरवाही, जरा सी बेहोशी और मृत्यु। अब तो एक पल का भी उसे किसी भी तरह की बेहोशी नहीं, इतना जागृत हो गया है, इतना जागृत हो गया है, कि अगले तीस मास तक एक बार भी ऐसा नहीं होता है कि उसे कोई चोट लगी, वो अपने आपको बचा ही लेता है क्योंकि, प्रतिपल, नित वो जागृत है, जैसे मन में सारे कोने जागृत हो गये हैं, अवचेतन मन के। ऐसा कोई समय है ही नहीं, कि वो सोया हुआ है। ऐसा कोई पल ही नहीं है कि वो बेहोश है, ऐसा जागरण का केंद्र उत्पन्न हुआ है। और जहां जागृति है, वहां विचार नहीं। विचार जैसे शून्य हो गये हैं, और केवल जागरण है। तीन मास पूरे हो जाते हैं, 9 मास हो गये। गुरू बुलाते हैं, कहते हैं- तुम उत्तीर्ण हुये, कल तुम्हें वापिस जाना है, तुमने बहुत अच्छा किया। और जब वो दिन आता है उसके घर जाने का, वो राजकुमार सोचता है यह बूढ़ा फकीर, मेरी 9 मास से परीक्षा ले रहा है। अब मैं ये भी तो देखूं कि ये खुद कितना जागृत है। वो बूढ़ा फकीर झाड़ के नीचे बैठा हुआ है और ये सोचता है कि अब मैं इस पर आक्रमण करके देखता हूं। वो यहां हैं, ये युवक, राजकुमार बहुत पीछे हैं, और जैसे ही ये सोचता है कि

मैं इसकी परीक्षा लूं वो बूढ़ा पीछे मुड़ता है और कहता है बेटा ऐसा सोचना भी मत मैं बहुत बूढ़ा हूं अभी। वो पूछता है कि आपको कैसे पता चला कि मैंने ये सोचा? मैंने तो कहा ही नहीं, वो बूढ़ा फकीर कहता है- मैं इस कदर जागृत हूं कि दूसरों के मन के सूक्ष्म भाव भी अब मुझे पता चलने लगे हैं। जागरण इतना बढ़ गया है, **Awakening** (अवेकनिंग) इतनी ज्यादा हो गई है, **Alertness** (अलर्टनेस) इतनी ज्यादा बढ़ गई है, सावधानी इतनी ज्यादा बढ़ गई है, कि ऐसा कोई पल है ही नहीं, कि मैं कोई गलती कर दूं, कोई बेहोशी का कर्म कर दूं। दूसरे जो सोचते हैं वो भी मुझे पता चल जाता है, ऐसा जागरण। वो युवक नतमस्तक होता है और वहां से चला जाता है।

जब जागरण होता है, मन का हर कोना जागृत हो जाता है। और जो गलतियां मनुष्य से होती है, वो बेहोशी में होती है, और जहां जागरण है वहां गलतियां नहीं। क्या हम जागे हुये हैं? महर्षि अरविदं ने लिखा है- अपनी जीवन कहानी में, अब तक मैं समझता था कि मैं होश में हूं, पर वो बेहोशी थी। अब तक मैं जिसे ज्ञान समझता था वो अज्ञान था। अब तक मैं अपने आपको जागा हुआ समझता था, पर मैं सोया हुआ था। ये हरेक को अपने आप से प्रश्न पूछना है, इस ब्राह्मण जीवन में हम बेहोशी में चल रहे हैं या जागरण की अवस्था में चल रहे हैं? यदि गलतियां हो रही हैं, यदि पश्चाताप का भाव है, किसी भी प्रकार का कोई भी दुःख है अर्थात् जागरण नहीं। अभी-अभी मुरली चली यहीं पर। एक धर्म, एक राज्य, सुख-शांति और सम्पत्ति यहां पर एक पल भी यदि दुःख का है तो यहीं संस्कार वहां जायेंगे। हमारा सुख किस भी विनाशी पदार्थ के अधीन नहीं है, नाम, मान, शान। हमारी शांति, यहां की शांति के अधीन नहीं है। अशांत **Circumstance** (सरकमस्टांस), अशांत वायुमण्डल में भी शांत, कमल समान, समृद्धि। ज्ञान अर्थात् केवल भाषण देना नहीं, ज्ञान अर्थात् केवल कोर्स कराना नहीं, परंतु ज्ञान अर्थात् समझ। शक्तियां- मैं मास्टर सर्वशक्तिमान, किसी का भी कमजोर कार्य मुझ पर प्रभाव नहीं डाल सकता। एक धर्म- सम्पूर्ण पवित्रता, एक राज्य, माया का राज्य नहीं। ये प्रालब्ध अब पानी है, तब नहीं इस प्रालब्ध का अब अनुभव करना है, स्वयं की चेकिंग स्वयं करो, स्वयं के चेकर स्वयं बनो, तो सम्पूर्ण जागरण जब होगा, तब स्वतः ही पता लगने लगेगा, कहां क्या होने वाला है? और हम अपने आपको संभाल लेंगे और जो दुर्घटना घटने वाली थी वह नहीं घटेगी। क्योंकि **ये मार्ग हादसों का मार्ग है, ये मार्ग दुर्घटनाओं का मार्ग है, कठिन है इतना आसान नहीं, हजारों निकलते हैं, कोई एक पहुंचता है, ऐसा ये मार्ग है, इसलिए सावधान। इसलिए Attention Please (अटेंशन प्लीज), खुद ही को जगाना है। जैसे वो राजकुमार जागृत हो गया**

हमेशा के लिये, सोते हुए भी जागरण की अवस्था में है। ऐसी जागृति हमारे अंदर आ जाये, आध्यात्मिक चेतना सम्पूर्ण जागृत हो जाये, जो एक पल भी देह भान का न हो। निरंतर आत्मिक आनंद में, **आत्मिक आनंद से बड़ा इस संसार में कोई आनंद नहीं**। तो बहुत खतरे हैं, वो कौन-कौन से हैं? और हमें क्या-क्या करना है, आज की इस क्लास में हम उसकी चर्चा करेंगे। और कैसे निरंतर जागृत अवस्था में रहें? ताकि हमसे कोई गलती नहीं हो, क्योंकि ब्राह्मण बनने के बाद किये हुये पाप, विकर्म, दुष्कर्म गलतियां, उसका पश्चाताप बहुत गहरा होता है। और पश्चाताप ही फिर आत्मा को आगे बढ़ने नहीं देता। किसी शिष्य ने अपने गुरु से पूछा- मुझे एक ऐसी बात बताओ आध्यात्म की, जो सारों का निचौड़ है, सारे शास्त्र, सम्पूर्ण आध्यात्म का वो एक निचौड़ है, वो एक बात बताओ? गुरु एक कलम लेते है और लिखते हैं एक शब्द **Attention** (अटेंशन), शिष्य कहता बस इतना ही मुझे और कुछ बताओ गुरु लिखते हैं नीचे, **Attention** (अटेंशन), वो कहता है- **Attention** (अटेंशन) मुझे पता है, मुझे और कुछ बताओ। गुरु तीसरा शब्द लिखते हैं **Attention** (अटेंशन)। वो पूछता है- **Attention** (अटेंशन) तो मुझे पता है पर **Attention** (अटेंशन) का अर्थ क्या है? वो बताओ, वो लिखता है- **Attention** (अटेंशन) अर्थात् **Attention** (अटेंशन) यही सार है। निरंतर **Attentive** (अटेंटिव), निरंतर सावधान क्योंकि आगे बहुत खतरा है। तो वो कौन कौन से खतरे है? इस मार्ग पर है तो बहुत सारे, **10 खतरों की चर्चा आज हम करेंगे-**

1. पहला : आग- साइन बोर्ड लगा हुआ है, सावधान आगे खतरा है। सबसे पहला खतरा है ब्राह्मण जीवन का आग, कौन सी आग? काम की आग। फैमिलियारिटी के रास्ते पर जो चल रहे हैं, धीरे-धीरे काम की आग का उन्हें सामना करना पड़ेगा। इस परिवार में जिन्होंने आपसी, अत्यधिक घनिष्ठता के और मैत्री के संबंध स्थापित कर लिये हैं, और जहां पर गुह्य भाष्य चल रहा है, प्राइवेट कन्वरसेन्स (**conversations**) चल रही है, मिलना चल रहा है, एक दूसरे को मिस करना चल रहा है। **फैमिलियारिटी का ये मार्ग धीरे-धीरे काम की आग की तरफ ले जायेगा और व्यक्ति को पता ही नहीं चलेगा।** लास्ट संडे की मुरली थी- नशा छा जाता है, व्यक्ति होता है, नाली में और सोचता है, कहां हूं? महल में। होता कुछ नहीं और सोचता है मैंने सब कुछ पा लिया। ये झूठा सा नशा चढ जाता है। मुरलियों में आता है काम का सेमी नशा। एक योगी इतना तपस्वी था, इतना तपस्वी था, कि धीरे-धीरे उसे एक ऐसी सिद्धि प्राप्त हो गई, कि वो आकाश में उड़ने लगा, वो रहना गुप्त चाहता था परंतु लोगों ने उसे

देख लिया, और ऐसी बांते गुप्त नहीं रहती है, सब जगह ये बात फैल गई। दूर-दूर से लोग आने लगे, कहने लगे हमें भी करके दिखाओ कैसे उड़ते हो तुम? वो परेशान हो गया, कहीं दूर चला गया परंतु राजा तक खबर पहुंच गई, राजा ने उसे बुलाया, तब तो उसे आना पड़ा राजा ने उसे प्रलोभन दिया कि तुम हमारे ही राज्य में रहो, हमारे ही राजमहल में, तुम्हें यहीं पर झोपड़ी बना दी जायेगी, उपवन में। सारी साधनायें करो, परंतु मुझे तुम जैसा व्यक्ति चाहिए। क्योंकि जब भी कोई समस्या हो तो मैं कहां जाऊं? आप जैसे योगी अगर मिल जाये मुझे तो मैं कृतार्थ हो जाऊंगा। कृपया आप यहां आ जाओ और वो वहां आ जाता है। उसकी इच्छा नहीं है, वो इन सांसारिक सुखों से दूर रहना चाहता है। परंतु उसे स्थान ही ऐसा दिया जाता है, जहां पर जंगल सा एकांत और शांति है। और दिखाया है, राजा उससे कहता है- मुझे भी एक बार उड़कर दिखाओ, तो वो उड़कर दिखाता है। उसे भोजन देने के लिये राजा एक बार अपनी कन्या को भेजता है, और वो उड़ रहा होता है नीचे आ रहा होता है और अचानक उसकी दृष्टि उस कन्या पर पड़ती है और जैसे ही उसे देखता है, केशलैण्डिंग, धड़ाम से गिरता है। ए मूवमेंट ऑफ लस्ट एण्ड डिस्ट्रक्शन ऑफ ऑल पॉवरस। एक पल का वो काम और उसकी सारी सिद्धियां नष्ट हो जाती है। इतना वो सूक्ष्म है, **एक पल शरीर पर नजर पड़ी और ब्राह्मण से अर्जित की हुई, सारी शक्तियां, सारा बल एक सेकेण्ड में नष्ट।** आग की तुलना है काम। हमारा जीवन संपूर्ण पवित्रता का जीवन है, अभी-अभी मुरली चली, बाबा ने कहा- एक धर्म, कौन सा वो धर्म है? संपूर्ण पवित्रता की धारणा का धर्म यहां होगा तो वहां एक धर्म होगा। संपूर्ण पवित्रता अर्थात् ब्रह्माचारी, सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म और स्वप्न में भी अपवित्रता नहीं। **क्या हमारी पवित्रता इतनी हैं? इतनी अखण्ड, इतनी प्रचण्ड, इतनी मजबूत कि संसार की कोई भी बात, कोई भी दृश्य, कोई भी व्यक्ति इस पवित्रता को नष्ट न कर सकें।** बाबा ने कहा कि प्यूरिटी तुम्हारी प्रोपर्टी है जायदाद इसे संभाल के रखो। कुमार-कुमारियों से मुलाकात है कई मुरलियों में, कुमारों की और कुमारियों की सबसे बड़ी संपत्ति है पवित्रता। **सबकुछ खो दो पर इसे नहीं खोना, क्योंकि यही सारी संपत्ति का आधार है।** तो जो भी मधुन में आये हैं और जिनकी प्यूरिटी में हलचल चालू हैं, और जिनका ब्रह्मचर्य डोलते रहता है, इसी भूमि में प्रतिज्ञा करके जानी है। जरा भी अपवित्रता न हो **बाबा को वो बच्चे बहुत प्रिय है, बहुत शुद्ध जो हैं, जिनके मन में बहुत शुद्धि है, बहुत ज्यादा पवित्रता है जिनके संकल्प, जिनकी वाणी में प्यूरिटी के प्रकम्पन है।** तो सावधान अत्यधिक फैमिलियरिटी विनाश की ओर ले जायेगी। जितना हो सके इस ब्राह्मण परिवार में सबका प्यारा तो बनना है, परंतु प्यारे बनने की विधि है- न्यारापन। हजारों से मिलो, हजारों के सम्पर्क में आओ परंतु डिटैच।

किसी को विशेष भाई और किसी को विशेष बहन बनाना, फोन पर लंबी-लंबी बांते, टू मच डिजीटल कांटेक्ट(**too much digital contact**) धीरे-धीरे फ्रेंडसिप डेवलप करायेगी। फिर हर बात उस व्यक्ति से शेयर करनी है, हर बात उसे बतानी है, उससे बहुत सारी एक्सपेक्टेडन्स (**expectations**) हैं। और जब वो पूरी नहीं होगी तो दुःख होगा फिर, और भगवान से आत्मा स्वतः ही दूर चली जायेगी। यहां तो बाबा कितनी सूक्ष्म बांते बता रहा है। नयनों की भाषा, संकल्पों की भाषा, भावनाओं की भाषा, ये रूहानी अलौकिक जीवन की भाषा है। ये भाषाएं कब सीखेंगे? क्योंकि बुद्धि तो देहधारियों में लटकी है। **सभी देहधारियों से प्रेम तो है परंतु सच्चा प्यार एक से है तो ही हमारी वाणी में शक्ति आयेगी, तो ही हमारे संकल्प सिद्ध होंगे।** क्योंकि बुद्धि एकरस है, और जब भी किसी व्यक्ति में बुद्धि अटकी हुई है तो हलचल में है, एकाग्र नहीं हो सकती। मुरली पढने के लिये, **मुरली को याद रखने के लिये, मुरली को समझने के लिये, सबसे ज्यादा एक वस्तु की आवश्यकता है और वो है सम्पूर्ण एकाग्रता।** जिसकी एकाग्रता जितनी अधिक वो उतना अधिक ग्रहण कर सकता है। अगर बुद्धि ही डिवाइडेड है, स्केटर्ड (**scattered**) है तो कैसे ज्ञान का अर्जन होगा, और **जहां ज्ञान नहीं, वहां अंधकार है, और जहां अंधकार है वहां दुःख** है। स्प्रिचुअल क्लेरिटी कैसे आयेगी? देख कैसे सकेगी बुद्धि? ये सत्य क्या है? असत्य क्या? नित्य क्या? अनित्य क्या? सार क्या? असार क्या? जो असार है उसी को सत्य समझेगी। जो झूठ है उसी को सत्य समझेगी। सबसे पहला खतरा है ये आग, काम। इसीलिये अपने आपको जगाना है, जैसे वो राजकुमार जाग गया था, निरंतर जागृत है, एक पल भी बेहोशी का नहीं। एक पल भी नहीं, सोते हुए भी जागृत है। कभी भी आक्रमण हो सकता है, कभी भी वार हो सकता है, माया का साम्राज्य है। बड़े-बड़े योगी, माया के अधीन हो गये। यज्ञ में किताब है, सभी कुमार जो बैठे हैं, भाई, जगदीश भाई जी की लिखी हुई ब्रह्मचर्य उसे पढ़े जरूर। अव्यक्त बापदादा की मुरलियों का संकलन है, **संपूर्ण पवित्रता**-ये दूसरी किताब। इन दो किताबों का अध्ययन करना है सभी को। ताकि बाबा ने पवित्रता के लिये आज तक जो कुछ कहा, ऐसा कुछ न हो जो हमें पता न हो। और जिस पर हमने चिंतन न किया हो।

2. दूसरा: बारिश - पुराने संस्कारों की या पुरानी यादों की बारिश। अचानक से वो बारिश आ जाती, अचानक से वो संस्कार इमर्ज हो जाते और हम गिर पड़ते हैं। छोड़ चुके थे वो सब कुछ पर अचानक पुरानी बात यदि याद आ गई तो वो संस्कार फिर से इमर्ज हो जाते हैं। पुराना कोई भोगा हुआ

भोग, पुरानी कोई दोस्ती, पुराना कोई कमजोर संस्कार। आज यदि याद आ जाये तो आत्मा फिर से उस स्थिति में स्थित हो जाती है और कमजोर बन जाती है।

आज सुबह की अव्यक्त वाणी। मुरली नं 2, बच्चे प्रश्न पूछते हैं? बाबा ये मुश्किल है, पुराने संस्कार है हमारे, क्या करें ? बाबा ने चार उत्तर दिये हैं-

पहला उत्तर-ये तुम्हारा जन्म कौन सा है? मरजीवा जन्म। तो पुरानी बांते कैसे याद आ रही हैं? वो तो मर चुका है। वहां पर शरीर जला देते हैं, यहां पर क्या तुमने नहीं जलाया है? पुराने संस्कार, पुराने स्वभाव और पुरानी स्मृतियां ये सबसे पहला उत्तर है बाबा का, आज की वाणी से। नया जन्म जीवंत मृत्यु का ये जीवन है, पुराना सब कुछ खत्म हो गया है। आत्मा ने इसी शरीर में नया जन्म लिया है, वो शूद्र जन्म था, वो विकारी जन्म था, अब नया जन्म है, संपूर्ण पवित्रता का ये जन्म है। इसमें वहां की कोई भी बात, कोई भी याद रिजेक्ट कर दो उसको।

दूसरा उत्तर- यदि संसार में कोई मर गया हो और वो जिंदा हो जाये तो उसे क्या कहा जाता है? ये है माया के भूत। अगर वो संस्कार, जो मर चुका था वापिस लौटकर आ गया अर्थात् वो माया के भूत। और भूतों को कोई अपने घर पर नहीं रखता है, क्या करता है उसको? भगाता है। अगर कोई संस्कार इमर्ज हो रहा है, जो बचपन का है, जो अज्ञानकाल का है, या इसी ब्राह्मणजीवन में बेहोशी की अवस्था का है। रिजेक्टेड, हटा दो उसको।

तीसरा उत्तर- ये कहना कि ये हमारे पुराने संस्कार है, बाबा ने कहा ये स्वयं को धोखा देना है। ये कहना कि ये मेरा नेचर है, ये मेरा स्वभाव है, मैं क्या करूं? हम तो ऐसे ही बोलते हैं जोर से, हम तो ऐसे ही डांटते हैं, हम तो ऐसे ही क्रोध करते हैं। ये मेरा स्वभाव है, मैं क्या करूं? हमको तो ऐसा ही रोना आता है बार-बार, छोटी-छोटी बांतों में। बाबा ने कहा सेल्फ डिसेप्शन, खुद को धोखा दे रहे हो।

चौथा उत्तर-पुराने से बहुत प्यार, तो सबसे पुराना क्या है? अनादिकाल के संस्कार। वो इमर्ज करो, ये तो मध्य के हैं, और मध्य को क्या कहा जाता है? बीच। और बीच भंवर में क्या हैं? परेशानी। ये हमारे संस्कार ही नहीं है, ये रावण के संस्कार है, रिजेक्ट कर दो उसको, ये कहो ही नहीं कि ये मेरा स्वभाव बन गया है। रोने का, रूठने का, रूसने का, दुःखी होने का, परेशान होने का, चिंता करते रहने का, बाबा ने कहा बच्चा बन जाओ।

7 बातें गिनाई है सुबह की वाणी में, अगर बच्चे बन गये तो क्या होगा। बच्चा अर्थात-

पहला - मालिक बन जाओगे।

दूसरा - बच्चा बन गये तो बेफिक्र बादशाह बन जाओगे।

तीसरा - निरंकारी और निराकारी का अनुभव करोगे।

चौथा- हद का जो भी है वह परिवर्तित हो जायेगा।

पांचवा - मास्टर नॉलेजफुल, इस एक शब्द में सारा ज्ञान समाया हुआ है, बच्चा।

छठवां- माया से बच जाओगे।

सातवां - बोझ कम हो जायेगा। बोझ है मैं और मेरे का। शरीर को भी अमानत समझोगे। बच्चा बन जाओ। सुबह की अव्यक्त वाणी मुरली नंबर 2

तो पहले तो यह लिस्ट बनानी है कि मेरा वो ऐसा कौन सा सूक्ष्म संस्कार है? जो अब भी प्रकट होता है, और जैसे ही वो प्रकट होता है, मेरी सारी स्थिति धड़ाम से नीचे गिर जाती है। ऐसी वो कौन सी बातें हैं? जो याद आते ही मन में हलचल होने लगती है, ऐसी वो कौन सी स्मृतियां हैं? कौन सी आदतें? कौन से एडिक्शन्स(**Addictions**)? कौन सी हैबिट? जो मुझे नीचे गिराती है। उसको पहले लिखना है, देखना है और अमृतवेला फिर से उन्हें देखना है, आंखे मिलाना है उनके साथ कि ये इतनी शक्तिशाली क्यों हैं? क्या है इस बात में, इस आदत में, इस एडिक्शन में, इस संस्कार में, इस स्वभाव में जो मेरे जैसे योगी को गिरा देती है। बाबा ने कहा स्वयं के चेकर खुद बनो, स्वयं की चेकिंग खुद करो, कोई दूसरा कब तक हमारी चेकिंग करेगा, और कब तक हमें समझायेगा, बतायेगा। हमें खुद ही को खुद देखना है और हमसे अधिक हमें कौन देख सकता है। क्योंकि जब ये बारिश होती है, तो सबकुछ बह जाता है। वो जो ज्ञान और योग के गांव खड़े कर रखे थे, घर खड़े कर रहे थे, ऐसी बारिश आती है कि सब कुछ डुबा देती है। इसीलिए अपने उस एक संस्कार पर काम करना है जिस पर सबकुछ करने के बाद भी वो अब भी विद्यमान है। सब कुछ कर लिया, ज्ञान-योग सारा लगा दिया पर वो संस्कार अब भी है, जा नहीं रहा है। वो हो सकता है- किसी में मोह है, इतना गहरा मोह कि उस व्यक्ति के बिना रह नहीं सकते। उसे कुछ होता है तो यहां कुछ होता है,

ज्ञान के दर्पण में देखना है कि क्या ये मोह बाबा को स्वीकार है? अपने आपको बाबा के सामने खड़े करना है, और बाबा से कहना है बाबा मेरा इस व्यक्ति के साथ जो संबंध है क्या तुम्हें स्वीकार है? और **बाबा को वहीं संबंध स्वीकार है जिसमें आत्मिक प्रेम है। जो मोह वाले संबंध है बाबा उसे रिजेक्ट कर देगा।**

3. तीसरा : लाइटिंग (बिजली)- तीसरा खतरा है इस मार्ग में अचानक जो बिजली गिरती है और बिजली अर्थात् बुरी खबर, बेड न्यूज। हम यहां बैठे हैं, अचानक घर से फोन आ गया, स्वजनों की मृत्यु, स्वजनों की बीमारी, अचानक जो हमारा अपना धाम, जिसको अपना कहते थे, उसे कोई बीमारी हो गई, अचानक उसे कुछ हो गया तो क्या हम हिल जायेंगे? अचानक न्यूज आ जाये कि हमारी सारी संपत्ति जो हमने जमा कर रखी थी, एक धक से सारी खत्म हो गई। क्या अवस्था होगी? हमें याद है जब हम मुंबई में थे, वहां पर एक डॉक्टर युगल हैं, उनका एक ही बेटा था। लण्डन भेजा, डेंटल की पढाई के लिये, डॉक्टर बन गया डेंटल का, सुबह उसने फोन किया- कि पापा मेरा रिजल्ट आ गया है, मैं पास हो गया हूं, बहुत खुश। और दोपहर को फोन आया कि उसका एक्सीडेंट हो गया है। और ये नहीं कि वो हॉस्पिटल लेकर गये, डेथ ऑन द स्पॉट (**Death on the spot**), दोनों मां-बाप शॉक में चले गये। कुछ शब्द ही नहीं बोल पाये, कुछ भी नहीं, जैसे डेड हो गई, पूरी सोच, वो फोन सुनते-सुनते ही। ऐसा भी नहीं कि हॉस्पिटल लेकर गये सीरियस है, फोन आया ऑन द स्पॉट डेथ। 6 महीने तक दोनों डिप्रेशन में चले गये, मां- बाप, एक ही बेटा। ऐसी बहुत सारी बिजलियां गिरेंगी। तीन चार दिन पहले मुरली में था, ये ट्रेन में चली जाये, इसकी डेथ हो जाये, तो बाबा कहेगा ड्रामा। सबने सुनी हैं मुरली? तीन- चार दिन पहले आई थी। मैं इसकी खांसी ठीक करने थोड़ी आया हूं, ये इसकी भोगना है, ये इसका हिसाब-किताब है, मैं तो पतित से पावन बनाने आया हूं। हरेक को जाना है, क्या हम इतने तैयार हैं? इस खतरे के लिये कि कभी भी अचानक से कोई न्यूज आ जाये, हम अचल-अडोल रहें। वो न्यूज कुछ भी हो सकती है कुछ भी। अलौकिक जीवन की, लौकिक जीवन की, आर्थिक, जॉब रिलेटिड, कुछ भी। इतनी हमारी मानसिक, आध्यात्मिक, आंतरिक तैयारी है। आज हम यहां है, कोई कहे यहां से चले जाओ या हमने मोह का विस्तार कर रखा है। अब्दुल कलाम आजाद कब पांच साल प्रेसीडेंट थे, और उनका सेवाकाल पूरा हुआ। **बस एक बैग थी जाते समय बस।** हम होते तो कितनी बैग होती? मधुबन में कितनी बैग लेकर आते और कितनी लेकर जाते? दो लेकर आते और जाते समय चार, किसी-किसी की 5, किसी -किसी की 8। दादी जानकी ने कभी कहा था, विदेशियों से मुलाकात- विदेशियों से बात कर रहे थे क्लास में, कि ऐसा कौन है? जो दूसरे देश में जाये

और वहां से कोई भी वस्तु बिना खरीदे वापिस आ जाये, उसको दादी कहेगी, इसमें जरा भी लोभ नहीं है। आंखे डूबती है, नई वस्तुओं को देखकर। ये खरीदूं, वो खरीदूं, ये चाहिए, वो चाहिएया तो व्यक्तियों में मोह या तो वस्तुओं में लोभ, कुछ भी नहीं चाहिए। **हमें अपने आपको अंदर से ऐसा मजबूत बनाके रखना है, न यहां कि प्रशंसा चाहिए, न किसी की स्तुति चाहिए। बाबा ने कहा ये सब विनाशी है, अविनाशी का आधार विनाशी नहीं हो सकता।** अभी जो मुरली चली यहां पर। परमात्म सुख हमारा आधार है। विनाशी सुख नहीं, कोई साधन, कोई सालवेशन, इसके आधार पर हमारी स्थिति नहीं है, न हमारा सुख है। तो तीसरी ये बिजली है, जो गिरेगी हरेक पर इसीलिए सावधान। अभी से मन को तैयार करके रखना है, नष्टोमोहा बनाके रखना है। सबने सुना होगा- थॉमस अल्वा एडीशन (*Thomas Alva Edison*) 1910, उसने जितना भीशोध किया था, थाउसेण्ड आयलेण्ड पार्क वो सब कुछ वहां पर न्यू जर्सी (**New Jersey**) में आग लग गई। पूरे प्लांट को आग लग गई और वो देख रहा है इतने वर्षों की सारी मेहनत, सारा रिसर्च एडीशन का जल रहा है। उसका बेटा भाग कर आता है, कहता है पिताजी यह क्या हो रहा है? पिताजी कहते हैं- लुक ऑल अवर मिस्टेकस आर गेटिंग वर्नट अप (**Look, all mistakes are getting burnt up**) हमने जो-जो गलतियां की है न, वो जल रही है। इतनी अचल-अडोल स्थिति, और कहता है जाओ अपनी मां को बुलाकर लाओ, उसने कभी ऐसा दृश्य देखा नहीं होगा। इतना करोड़ों का नुकसान हो रहा है सामने। वो देख रहा है, कर क्या सकते? परंतु दुःखी नहीं हुआ। 6 मास के अंदर सबकुछ फिर से खड़ा कर दिया। ये उसके बेटे ने रीडर डायजेस्ट के 1952 के एडीशन में अपने पिताजी के विषय में ये घटना लिखी है। ऐसी बहुत न्यूज आयेगी कि यहां ये हुआ, वहां वो हुआ जब तक हमारा उनसे कोई संबंध नहीं है, हम अचल अडोल रहते हैं। जैसे ही पता चला हमारा कोई है तो हलचल चालू होती है। एक विदेशी लेखक ने लिखा है - **Don't bring me good news, Bring mw bad news, Good news weakens me**। बुरी खबरे लाओ मेरे पास अच्छी खबरें आती हैं तो मैं कमजोर होता हूं। बुरी खबरें लाओ मैं और शक्तिशाली होता हूं, और मजबूत होता हूं। इसीलिये ये खतरा है। सावधान, ये सब कुछ होगा, बाबा ने सबकुछ बता के रखा है, ऐसा भी होगा, वैसा भी होगा। **ये तुम्हारे अब के दुःख तो कुछ भी नहीं है, दुःखों के तो पहाड़ गिरने वाले है और फिर से सुखों के पहाड़ खड़े होंगे।**

4. चौथा : खाई-अगला खतरा है खाई। इस रास्ते में खाई आयेगी और वो खाई है विकारों की खाई। एक बार उसमें गिरे कि उससे निकलना बड़ा मुश्किल है फिर।

एक व्यक्ति ने अपनी जीवन कहानी लिखी है, **5 अध्याय है-**

चेप्टर नंबर 1- मैं रास्ते से जा रहा था, एक गड्डा था मेरा ध्यान नहीं था, मैं गड्डे में गिर गया, मेरी गलती नहीं है। इट्स नॉट मॉय फाल्ट और मैं कभी निकल ही नहीं पाया।

चेप्टर नंबर 2- मैं रास्ते से जा रहा था, एक गड्डा था, मुझे पता था वहां गड्डा है, पर मैंने ध्यान नहीं दिया, मैं फिर गिर गया और जोर से चिल्लाया गलती मेरी नहीं है, गलती मेरी नहीं है और मुझे बहुत समय लगा निकलने के लिये।

चेप्टर नंबर 3- मैं रास्ते से जा रहा था, एक गड्डा था, वहीं गड्डा था,पर मेरा ध्यान नहीं रहा और मैं फिर गया और फिर वो चिल्लाया गलती मेरी है, गलती मेरी है, और मैं बहुत जल्दी निकल गया।

चेप्टर नंबर 4- मैं रास्ते से जा रहा था, वहीं गड्डा था, मैं गड्डे के बाजू से निकल गया।

चेप्टर नंबर 5- मैंने रास्ता ही बदल दिया।ये ऑटोबायोग्राफ़ी है उसकी।

जब पता है एक बार गिरे थे, कितना समय लगा था निकलने में, स्थिति बनाने में, सब अमृतवेला नष्ट हो गया था, मुरली चिंतन खत्म हो गया था, सेवा में रूचि ही नहीं थी, उदासी सी छा गई थी। **इसलिए चेप्टर नंबर 5 क्या है?उस रास्ते से जाओ ही नहीं।** किसी विदेश की बहन ने हमसे एक बार प्रश्न पूछा था कि द्वापर से जो आत्मायें गिरी उसका कारण क्या है? और उत्तर उसने खुद ही दिया था, क्यूरियोसिटी (**curiosity**), उत्कण्ठा क्या है, काम? क्या है ये विकार? क्यूरियोसिटी। जिस रास्ते में जाना ही नहीं है वहां का, जिस जगह जाना ही नहीं उसका एड्रेस क्यों पूछना है? ये रास्ते विकारों की तरफ जाते, गड्डे हैं वहां पर, गिरने के बाद निकलना बहुत मुश्किल है। **अव्यक्त बाबा के महावाक्य है कुमार, कुमारियां बाबा से पूछते हैं, बाबा हम क्या करें? मां बाप कहते हैं शादी करो, बाप कहते हैं- बाप की याद में अगर गला भी कट जाये तो ऊंच पद पाओगे, पर विकार में नहीं जाना।** करने दो जिसको जो करना है, जबरदस्ती कोई नहीं कर सकता। गाय नहीं हो जो कोई भी बांधकर कहीं पर भी ले जाये, बकरी हो? नहीं। **खाई है विकार। खाई भी है और काई भी है काई में फिसल जाते हैं।**

5. पांचवा : सुनामी- कौन सी सुनामी? सप्रेस्ड डिजायर (**Suppressed desires**), *दमित इच्छाएं और भावनाओं की सुनामी* जिसने अपने हृदय में दबा के रखा है, वो सुनामी की तरह प्रकट होगा। जिसने

कोई ऐसी इच्छा छिपाकर रखी है कि ज्ञान में आने के बाद वो छिप गई दब गई। कॉलेज में थे, इच्छाएं थी बहुत और फिर अचानक ज्ञान मिल गया। ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बन गये, पर वो इच्छा अभी भी है, छिपी हुई है, दबी हुई है, दमित है, रिप्रेस्ड डिजायर। और वो इच्छा ऐसी है कि अंदर ही अंदर धक्के देती रहती है। अगर उसको नहीं समझा, नहीं जाना तो एक दिन डुबो देगी। सुनामी की तरह आयेगी वो रिप्रेस्ड डिजायर (**repressed desire**), अपनी ही अंदर छिपी हुई इच्छाओं को देखना है, मन के किस कोने के अंदर कौन सी इच्छा छिपी हुई है। एक सन्यासी उपनिषदों में लिखा है- तपस्या कर रहा है जंगल में, सबने सुना होगा, कठोर तपस्या कर रहा है, एक कन्या एक ऋषि कन्या, उस तपस्वी को देख लेती है एक बार, उसको लगता है, मुझे इसकी सेवा करनी चाहिएपरंतु उसे ये भी ध्यान है कि मुझे इसका ब्रह्मचर्य, इसकी तपस्या भंग नहीं करनी है। इसके लिये गुप्त रूप से, सूक्ष्म रूप से, वो कभी फल रख देती है, पर अपने आपको प्रगट नहीं करती। कभी फूल बिछा देती है, कभी फल, कभी पानी, जब वो नहीं रहता है। वो दिन भर जंगल में एकांत में तपस्या करता है, सुबह स्नान के लिये नदी पर जाता है और वो फिर से छुप जाती है, ये कन्या, पर दिखने में कुरूप है। दिखाया है वो तपस्वी की तपस्या बढ़ रही है, ऊपर इंद्र का सिंहासन डोल रहा है। इंद्र एक ऐसा खेल करता है कि वो जो कुरूप कन्या होती है, उसको रूपवती बना देता है। ताकि इस सन्यासी की तपस्या भंग हो जाये, परंतु वो सन्यासी तो अपनी लगन में मगन है। धीरे-धीरे-धीरे उसकी तपस्या बढ़ती जा रही है, बहुत कठोर होती जा रही है। और एक बार जब वो तपस्या कर रहा होता, अचानक उसकी आंख खुलती है, देखता है वो कन्या सामने है, वो वहां जल रख रही है। वो उसे देखता है और आंख बंद कर लेता है और वो वहां से चली जाती है। उस कन्या को बहुत दुःख होता है कि उसने मुझे देख लिया। और वो सोचती है अब मैं यहां नहीं रहूंगी हमेशा के लिये चली जाऊंगी यहां से। क्योंकि मुझे किसी की तपस्या भंग नहीं करनी है परंतु उसे अंदर से थोड़ी खुशी भी होती है कि उसने मुझे देखा तो उसे पता तो चला कि मैं हूं, जो इतने महिनों से उसकी सेवा कर रही थी। फिर दिखाया है वो तो चली गई तपस्वी तपस्या कर रहा है, अन्न, जल सब कुछ धीरे-धीरे त्याग देता है, ऐसी घनघोर, कठोर तपस्या। वो मिट्टी का पहाड़ बन जाता है ऊपर से। इंद्र प्रकट होते हैं, कहता है मैंने आज तक ऐसी तपस्या किसी को करते नहीं देखा। बोलो तुमको क्या चाहिए? क्या तुमको स्वर्ग चाहिए? वो सन्यासी कहता है- मुझे स्वर्ग नहीं चाहिए। इंद्र को आश्चर्य होता है, फिर कर क्यों रहे थे इतनी तपस्या? मांगो तुम्हें जो मांगना है, क्या तुम्हें मोक्ष चाहिए? मैं तुम्हें मोक्ष दे दूंगा। वो तपस्वी कहता है, वो युवा सन्यासी कहता है- मुझे मोक्ष भी नहीं चाहिए। इंद्र कहता है- कि फिर तुम्हें चाहिए क्या? वो तपस्वी कहता है- वो कन्या कहां है। वासना

बहुत सूक्ष्म है, छिपी है किसी कोने में मन के उसे वहीं दबोच के बाहर निकालना है, नहीं तो वो सुनामी बन जायेगी। लौकिक में थे इच्छा थी बहुत नाम, मान, शान हो जाये फिर ब्रह्माकुमारी में आ गये। नाम, मान हुआ ही नहीं। परंतु अंदर से छिपी सी इच्छाएं इसलिए सेवा करके आते हैं। सेवाओं का समाचार सुनाने को कहा जाता है, वो सेवाओं का कम, मैं का समाचार ज्यादा होता है। क्योंकि अंदर छिपी हुई इच्छा थी, वो प्रकट हो रही है। अपनी सूक्ष्म इच्छाओं को देखना है। सप्रेस्ड एण्ड रिप्रेस्ड डिजायर विल कम आऊट एज सुनामी वन डे। नहीं तो सुनामी का रूप धारण करके आयेगी।

6. छठवां :रेगिस्तान(डेजर्ट)- अकेलेपन का रेगिस्तान, खतरा है। अचानक ब्राह्मण जीवन अकेला-अकेला महसूस होता है, इतने कुमारों का हमको फोन आता है, कहते हैं कुमार- कि हम क्या करें? अभी तो ठीक है पर आगे जाकर हमारा कौन सहारा रहेगा? अभी से अकेलापन लगता है। बाबा ने मुरलियों में कहा है- चतुर्भुज विष्णु बनना है, वो समझते हैं यहीं पर बनना है, यहीं पर साथी ढूंढने लगते हैं। अकेलापन एक रेगिस्तान है, दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता है, इस रेगिस्तान में। दुःखी हो जाती है आत्मा, क्यों अकेलापन आता है ब्राह्मण जीवन में? सबकुछ होते हुए, इतना बड़ा परिवार है, इतना बड़ा सेवाकेन्द्र है, इतना बड़ा मधुबन है, दादियां है, ज्ञान है, सबकुछ है, लेकिन फिर भी अंदर में अज्ञात सा अकेलापन है। ऐसा लगता है कोई चाहिए, कुछ मिल जाये, उपाय? शायद बाप को अपना अंतरंग साथी नहीं बनाया है। और एक दूसरी सूक्ष्म बात ज्ञान को अपना साथी बना लेना है। **ज्ञान चिंतन को अपना साथी बना लेना है, तो अकेलापन नहीं आयेगा। रोज की मुरली सामने हैं उसके चिंतन में डूब जाओ, अकेलापन स्वतः ही खत्म हो जायेगा। अकेलापन है अर्थात् ज्ञान की कमी, अकेलापन है अर्थात् प्रभु प्रेम की कमी।** अभी-अभी मुरली चली, बाबा ने कहा मस्तक में चमकती हुई रेखायें देख रहे हैं, आंखों में रूहानियत देख रहे हैं, हृदय में लवलीन अवस्था देख रहे हैं, हाथों में खजाने देख रहे हैं, होठों पर मधुर मुस्कान, रूहानी मुस्कान, अलौकिक मुस्कुराहट देख रहे हैं। मुख में श्रेष्ठ वाणी देख रहे हैं बापदादा। कदमों में हर कदम में पदम देख रहे हैं। 7 बातें थी। क्या वो सब हममें हैं? शायद नहीं हैं। इसलिए तो अकेलापन, इतना बड़ा सेंटर, परिवार सब कुछ है, परंतु खालीपन क्यों है? पता नहीं। ज्ञान को अभी छुआ ही नहीं है, केवल नोट किया है डायरियों में बस। स्कैच किया है बस ज्ञान को, अभी सरफेस को। डूबे नहीं है अभी तक **इसीलिए अकेलापन है तो अकेलापन एक रेगिस्तान की तरह है, सावधान आगे खतरा है। ज्ञान योग को अपना साथी बना लो।**

7. सातवां: अंधकार- कौन सा अंधकार? अहंकार का अंधकार। अभी-अभी मुरली चली बाबा ने काम दिया था, लिस्ट बनाओ किसकी? रॉयल मै-पन की। किसकी लिस्ट बनाओ? रॉयल मै-पन, ये बड़ा सूक्ष्म है, और लंबी लिस्ट है इसकी। **तीव्र पुरूषार्थियों की दो निशानियां- एक वो देवता होंगे, दूसरी निर्माण और निर्मान।** तीन खातें जमा करने हैं- स्वपुरूषार्थ का खाता, पुण्य का खाता और तीसरा निःस्वार्थ का खाता। मै-पन नहीं, अहंकार, मैंने ये किया, मैंने वो किया, मैं ऐसा करता हूं, मैं वैसा करता हूं, मैंने ऐसा भी किया, मैंने वैसा भी किया। **हमने किया क्या है? कुछ भी तो नहीं किया। यहां हमारे सामने दादियां है, उन्होंने सर्वस्व समर्पित कर दिया उनकी सेवाओं के आगे हमारी सेवायें क्या हैं? कुछ भी नहीं।** और फिर भी छोटी-मोटी सेवाओं का इतना प्रोपोगेण्डा (propaganda) और इतना अहंकार। **सेवाओं की आड़ में, मैं का पोषण कर रहे हैं।** मैं ये हूं, मैं वो हूं, मेरा चिंतन अच्छा है, मेरा बोलना अच्छा है, मेरा भाषण अच्छा है, मेरी सेवा अच्छी है, मैं इंचार्ज हूं, **मैं निमित्त हूं, निमित्त का भी अहंकार। हम निमित्त हैं, ऐसा बोलते भी निमित्त मात्र।** अपने ही मैं की खोज करनी हैं, कहां ये मैं आ जाता है? थोड़ा सा किया कुछ, तुरंत मैं। थोड़ा सा कुछ किया। हमें स्तुति की कामना है, अपेक्षा है **praise** की, अप्रेसिएशन (**Appreciation**) की, रिकग्नीशन (**Recognition**) की, **कोई पूछे ये भोजन किसने बनाया? हमने बनाया, तो खुशी होती है।** सुबह मुरली में था, अमानत। ये शरीर अमानत हैं, मेरा नहीं है कुछ भी। अंधकार है अहंकार।

8. आठवां: भूकंप- कौन सा भूकंप? दिल टूट जाने का भूकंप। जैसे वहां दरार पड़ती है, वैसे दिल में दरार पड़ती है, ऐसा भूकंप कि व्यक्ति दिलशिकस्त हो जाता है, क्यों? क्योंकि अपेक्षाएं पूर्ण नहीं हुई हैं, किसी से दिल लगाकर बैठे हैं। **जितनी ज्यादा अपेक्षाएं, उतना अधिक दुःख।** जितनी कम अपेक्षाएं, उतना कम दुःख। ब्राह्मण जीवन में भी कई ऐसे हैं, जिनका दिल टूटा है क्यों? शायद कोई सेवा छीन ली गई है। शायद स्थान बदल दिया गया है, शायद मन पसंद सेवा थी, वो अब नहीं मिल रही है, शायद स्थान, सेवाकेन्द्र, शायद वो व्यक्ति जो चाहिए था, वो वहां से चला गया है। दिल टूटा हुआ है, शायद जिसके साथ लंबा समय रहे उसने शरीर छोड़ दिया, शायद किसी ने धोखा दे दिया, हार्टफेल, हार्टब्रेक। ये भूकंप की तरह है इसीलिए **अधिक से अधिक शेयरिंग केवल बाबा के साथ हो बस। जितना व्यक्तियों की शेयर करेंगे, उधर शेयरिंग अपने आप कम होता जायेगा।** अपनी कहानी दुःख की, परिस्थिति की,

फोन पर किसी व्यक्ति को एक घण्टा सुनाई, अब बाबा के सामने क्या सुनायेंगे? भूकंप की तरह हैं ये। इसीलिए इससे बचना है। बार-बार अपने आपको देखना है कि मैं जहां हूं, वो कैसी अवस्था हैं? अचल-अडोल, श्रेष्ठ, आत्म अभिमानी, बाबा जैसा चाहते हैं वैसी हैं? या कुछ और हैं। सच्चाई स्वीकार करो। हम संसार के लोगों से कहते हैं-पहले ये मानों की दुर्गति हुई हैं तो सद्गति का मार्ग हम दिखायेंगे। अगर सद्गति चाहिए तो सबसे पहले स्वीकार करना होगा कि मेरी दुर्गति हो गई है। और ब्राह्मण बनने के बाद कई वर्ष ब्राह्मण जीवन में चलने के बाद यदि दुर्गति हुई है, तो इसे भी स्वीकार करना है। ताकि इससे निकल तो सको, नहीं तो नीचे ही नीचे, नीचे ही नीचे, नीचे ही नीचे, नीचे ही नीचे जाते रहेंगे। जैसे किसी बाल को, गेंद को सीढ़ी पर फेंक दो, क्या ऊपर आयेगा वो? नो चांस, इट विल गो डाउन। नीचे ही नीचे, नीचे ही नीचे जाते जायेगा। स्थिति भी ऐसी है, नीचे जाने लगी तो नीचे ही जायेगी। अंतर्मुखी स्वीट साइलेंस की अवस्था में स्वयं को स्थित करो, और फिर चेक करो। सुबह की अव्यक्त वाणी-ये तीन भाषाएं हैं।

9. नौवां :बाढ़- व्यर्थ और निगेटिव संकल्प की बाढ़। आगे नहीं जाना, खतरा है। सावधान। एक बार निगेटिव संकल्प चालू हो गया उसके पीछे दूसरा निगेटिव, तीसरा निगेटिव, निगेटिव ही निगेटिव। एक बार व्यर्थ चालू हो गया, रूकता नहीं वो। आज सुबह की अव्यक्त वाणी, मन जीत अर्थात् व्यर्थ और विकल्प से मुक्त। जितना यहां मनजीत होंगे, उतना वहां जगतजीत होंगे। मुरली नंबर 2, आठ तारीख की, दिसंबर मास 1985, व्यर्थ का कारण क्या है मेरे जीवन में? कौन हैं? क्या कोई व्यक्ति हैं, कोई स्थान हैं?,कोई सेवा हैं, क्या हैं? कोई भाव हैं, कोई भावना हैं, कोई स्मृति हैं, कोई चिंता हैं, जैसे ही आती हैं, व्यर्थ चालू हो जाता है। जैसे ही सुना तुम्हारे बारे में लोग ऐसा-ऐसा कहते हैं, व्यर्थ चालू हो जाता है। कौन हैं जो कहता हैं? किस-किस के मुंह बंद करोगे? हमारी कोई निंदा कर रहा हैं, जैसे ही सुना, क्रोध, आवेश, क्यों? आज सुबह डबल विदेशियों का क्लास था, चर्चा थी, टॉपिक था, पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस (**Pilgrim's Progress**), आध्यात्मिक राही की प्रोग्रेस हो रही है, कैसे समझे? पैरामीटर क्या हैं? माप दण्ड क्या हैं? जिससे पता चले कि मेरी प्रोग्रेस हो रही है। फ्रीडम कितना हुआ है अंदर? एक तरफ स्तुति, एक तरफ निंदा, दोनों ही साक्षी होकर देख रहे हैं- ये हैं प्रोग्रेस। फ्रीडम फ्रोम डिजायर, इंटरनल डिजायर (**Freedom from desires**)। एक तरफ विरोध, क्रिटिसिजम (**Criticism**)। दूसरी तरफ वाह-वाह, वाह-वाह बहुत अच्छा, तुम योगी हो, तुम तपस्वी हो, तुम महान हो। ये दोनों ही अवस्थाओं में जो मुक्त हैं, और कितना मुक्त है? वो डिफाइन करेगा कितनी आध्यात्मिक प्रोग्रेस हो रही है। एक बहन, विदेशी बहन ने हमसे कभी प्रश्न पूछा था, बहुत

सीनियर बहन, शायद 40 साल से ज्ञान में है, उससे भी ज्यादा। उन्होंने पूछा था तुम कौन हो? हूँ और यू? और उन्होंने कहा मुझे वो उत्तर नहीं देना जो मैं जानती हूँ। हूँ आर यू (**who are you?**) ये अपने आपसे पूछना है मैं हूँ कौन? क्या हूँ? कहां हूँ? सूचनायें बहुत हैं, आत्मा हूँ, परमात्मा की संतान हूँ, परमधाम निवासी हूँ, घर जाना है। बहुत सूचनायें एकत्रित कर ली हैं। इसे ज्ञान नहीं कहा जाता, **ज्ञान अर्थात् समझ, ज्ञान अर्थात् अण्डरस्टैंडिंग, ज्ञान अर्थात् अनुभव, ज्ञान अर्थात् विवेक, ज्ञान अर्थात् परिवर्तन, ज्ञान अर्थात् प्रैक्टिकल एप्लीकेशन, ज्ञान अर्थात् समस्त आवेगों से परे अवस्था।** तूफान है तूफान, व्यर्थ और निगेटिव का। देखना है कौन सी चीज है जो निगेटिव लाती हैं मन में, पॉजिटिव इमोशन्स कैसे क्रियेट किये जायें, इस निगेटिव परिस्थिति में।

10. दसवां : पर्वत- गोवर्धन पर्वत। सावधान आगे खतरा है। एक बहुत बड़ा पर्वत है, और वो पर्वत हैं इस तीव्र पुरूषार्थी जीवन में आने वाले सारे विघ्न। कौन-से विघ्न है? अमृतवेला निर्विघ्न चल रहा है, या उसमें विघ्न है। **यदि अमृतवेला ही शक्तिशाली नहीं तो दिन शक्तिशाली कैसे हो सकता है? चाहे दिन भर कितनी भी सेवायें कर लो, स्थिति डगमग होती रहेगी क्योंकि अमृतवेला फर्स्ट श्रीमत है, वहीं मिस कर दी।** बाबा के महावाक्य है- **अमृतवेला 1 घण्टा कम, उधर एक जन्म कम, यहां के घण्टे, यहां के जन्म।** क्या कर रहे हैं हम अमृतवेले के साथ? क्या अमृतवेले में कोई विघ्न है? मुरली में कोई विघ्न है? चिंतन हो रहा है या बस संसार का चिंतन चल रहा है। बुद्धि उसी में डूबी रहती है धंधा, व्यापार या केवल सेवा-सेवा-सेवा बुद्धि में फिरती रहती हैं, योग है ही नहीं। **ये न भूलें सेवा इज द फोर्थ सब्जेक्ट ऑफ ब्रहमाकुमारीज। जिन्होंने इसको फर्स्ट बनाया है और ज्ञान-योग को छोड़ा है सेवा ही उनके लिये बंधन और संस्कारों का टकराव का कारण बनेगी। सेवाओं के जंगल में तपस्या खो न जाये।**

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते जाते एक सूक्ष्म अहंकार हमारे साथ चलता है, कि हमने बहुत जान लिया, बहुत सेवायें कर ली, बहुत कुछ कर लिया, फिर से बच्चा बन जाओ। सुबह की साकार मुरली- फिर से छोटा बच्चा बन जाओ। बाबा ने कहा इसी शब्द में सारा ज्ञान समाया हुआ है, संसार का महाज्ञानी नहीं जानता है, कोई पण्डित नहीं जानता है, वो तुम जानते हो, एक शब्द को जानने से बच्चा, मास्टर नॉलेजफुल हो गये हो। जैसे एक कंपनी है कार की, कार तैयार है बनकर, ब्रैंड न्यू कार, अंदर ही बनी है बहुत बड़ी कंपनी में, अब कंपनी से कार को बाहर निकालना है पर वो जो दरवाजा है - वो थोड़ा छोटा पड़

गया, ऊपर स्क्रेच होने की संभावना है। सब चिंतित हो गये, अब कैसे निकालें इतनी महंगी कार? आज तक ऐसी कार नहीं बनी है। इतनी नई, पर ये तो हमने सोचा ही नहीं, क्या अब इस दीवार को, इस दरवाजे को तोड़ दें? क्योंकि कार को निकालना अर्थात् स्क्रेच हो सकती है ऊपर से। सब लोग सोच रहे क्या करना चाहिए? क्या करना चाहिए? वहां पर एक वाचमैन खड़ा है वो कहता है- मैं कुछ बताऊं, वो कहते- ये क्या बतायेगा, ये तो टेकनीकल प्रोब्लम है, वो कहता है **I have one suggestion** | कार की हवा निकाल दो, कार बाहर आयेगी। इधर बहुत हवा भरकर रखी हैं, मैं की। उसको थोड़ा निकाल दो। तो कार बाहर आयेगी।

तो ऐसे दस बातें हमने देखी। इस ब्राह्मण जीवन की | सबसे पहली आग प्रतिज्ञा करनी है कुछ भी हो जाये, कुमारियों से मुलाकात अभी-अभी साकार मुरली थी गटर में नहीं जायेगी, दूसरा बारिश, ढूंढना है वो कौन सा संस्कार है, वो जा नहीं रहा है सबकुछ करने के बाद, तीसरा बिजली कभी भी गिर सकती है, तैयार रहना है। चौथा खाई एक बार गिर गये तो निकलना मुश्किल है। इसलिए पांचवा चेप्टर है उस मार्ग में जाओ ही नहीं रास्ता ही बदल दो। पांचवा सुनामी देखना है वो कौन सी इच्छा है जो अभी भी दबी हुई हैं, उनको बाहर निकालना है। अमृतवेला देखना है, उसे योग की शक्ति से भस्म कर देना है। वो बीज में ही भस्म कर देना है उसको, देखना है वो इच्छा वहां है मुझसे ये शक्तिशाली किरणें निकलकर उस बीज को ही भस्म कर रही हैं। अब वह अंकुरित कैसे होगा? जला दो बीज को। उसके बाद में रेगिस्तान, अकेलेपन का। उसके बाद में अंधकार, अहंकार का। उसके बाद में अर्थक्वेक, भूकंप किसी से इतना न दिल लगा के रखो, कोई भी हो सकता है वो, बहन, भाई, सीनियर, जूनियर, साथी, बाहर वाला स्टूडेंट कोई कि दिल ही टूट जाये। उसके बाद में फ्लड, बाढ़, किसकी बाढ़? व्यर्थ और निगेटिव की बाढ़ और फिर पर्वत अर्थात् इस पुरूषार्थी जीवन में कौन से विघ्न है? अमृतवेला विघ्न आ रहे हैं, मुरली में विघ्न आ रहे हैं, दिन भर की दिनचर्या में कहां विघ्न हैं? कौन सा विघ्न है? मैं, मेरेपन का कोई विघ्न है, नुमाशाम का योग क्यों नहीं हो रहा है? हम एक सेवाकेन्द्र पर गये थे, वहां का भाई कह रहा था कि यहां का सेवाकेन्द्र 30 साल से निर्विघ्न है। मैंने कोई विघ्न देखा ही नहीं यहां पर। हमने पूछा ऐसा क्यों? उन्होंने कहा- हमारे यहां पर नियम हैं अमृतवेला इतना पक्का है सबका, कोई भी मिस नहीं करता स्टूडेंट और शाम को सब के सब नुमाशाम के योग में जितने आ सकते हैं, कभी मिस नहीं किया। और वो खुद कह रहा था मैंने भी कभी मिस नहीं

किया। नुमाशाम का योग, अमृतवेला तो हैं ही शक्तिशाली पर शाम का योग। जैसा अमृतवेला शक्तिशाली वैसा नुमाशाम भी शक्तिशाली हो जाये। योग ही कवच है, ब्राह्मणों का किला है। तो विघ्न कौन कौन से हैं? तो सावधान अटेंशन।

ओम शांति